Total Pages : 6

# 2602

## Second Year Arts Examination, 2018

## RAJASTHANI SAHITYA

### Paper–II

### ( पद्य )

**Time allowed : Three Hours**
**Maximum Marks : 100**

**खण्ड-अ** [Marks : 20

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

**खण्ड-ब** [Marks : 50

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

**खण्ड-स** [Marks : 30

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

## खण्ड-अ

1. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

### इकाई-I

(i) ''परभात रै पौर रै उजास में/दीखण दौ/उजला उणियारा/धौला-घट दिन में।'' किस कविता की पंक्ति है?

(ii) ''गूंथीजतीगी इजगरे रै कसाब ज्यूं/बण घात।'' पंक्ति में 'इजगरे' शब्द का क्या अर्थ है?

### इकाई-II

(iii) 'चतुर चिंतामणि' पुस्तक के प्रकाश कौन हैं?

(iv) चतुरसिंह जी ने किस भाषा में साहित्य को जन-जन तक पहुँचाया?

### इकाई-III

(v) 'नागदमण' मूलत: किस भाषा में लिखा गया है?

(vi) झूला सांयाजी की दो रचनाओं के नाम लिखिये।

## इकाई-IV

**(vii)** 'उठतौ-जमारौ' कविता में-'मिनखां री ऊण्डी आस्' पंक्ति में 'ऊण्डी' का अर्थ क्या है?

**(viii)** चतुर चिंतामणि रचना किन दो भागों में विभक्त है?

## इकाई-V

**(ix)** साक्षी का तद्भव रूप क्या है?

**(x)** 'अलंकार' मूलत: क्या है?

## खण्ड-ब

## इकाई-I

**2.** कवि आईदानसिंह भाटी रचित 'हंस तोड़ा होठां रो सांच' के अन्तर्गत 'कोरौ-सवाल' कविता का मूलार्थ स्पष्ट कीजिए।

**अथवा**

**3.** 'मैं देखलियो आभो-जमीं' खण्ड की कविताओं में लुप्त होती मनुष्यता के संदर्भ में कवि के विचार स्पष्ट कीजिए।

## इकाई-II

4. चतुर चिंतामणि में व्यक्त वैराग्य को स्पष्ट कीजिए।

**अथवा**

5. चतुर चिंतामणि के दोहावली में व्यक्त सामाजिक पक्ष पर अपने विचार संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

## इकाई-III

6. 'नागदमण' में अभिव्यक्त पौराणिक कथा के माध्यम से युगानुकूल भावनाओं को समझाइये।

**अथवा**

7. ''क्या 'नागदमण' रचना को पवाड़ा की संज्ञा दी जा सकती है।'' अपना मत संक्षेप में दीजिए।

## इकाई-IV

8. निम्नलिखित पद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

इण दूखती रग माथै
थांरौ खुद रौ हाथ
पङ्क तर परतख सीधौ
राईके री डांग ज्यूं।
बगत रै इण मोड़ माथै
थारी अर म्हारी दोस्ती

कींकर निभैला म्हांरा साथ?

**अथवा**

9. मेरो मेरो करत है, तेरो कहा विचार।

तन हू लेदो ना करै, होत छनक में छार।।

तो हू उत्सव करत है, अहो अनागत पीर।

नये वरष के संग ही, जूनो होत शरीर।।

## इकाई-V

10. निम्नलिखित पद्यावतरण की व्याख्या कीजिए :

जिमावै जिकै भावता भोग जांणि,

परुसै जसोदा जिमै चक्रपाणी

अरोगै अधायै कियौ आचमत्रं,

कपूरी भ्रहै पान बीड़ौ क्रसत्रं।।

**अथवा**

11. हुई रूपमयी देव देखैं हैरात्रं

जपै जागसी नाग राखै जतत्रं।

अहँ दाखवै बाळ होसी अवारौ,

पगल्लै पगल्लै महल्लै पधारौ।।

## खण्ड-स

12. 'कोरौ सवाल' खण्ड की पाँचों कविताओं का मर्म स्पष्ट कीजिये।

13. 'चतुर चिंतामणि' की लोक भाषा पर अपने विचार प्रकट कीजिए। यथा संभव उदाहरण भी दीजिए।

14. 'नागदमण' के कथा स्त्रोत पर अपना अभिमत स्पष्ट कीजिए।

15. (क) काव्य में अलंकारों का महत्त्व समझाइये।

(ख) तत्सम शब्दों की व्युत्पत्ति स्पष्ट कीजिए।